Research Paper History

Bhagatsinh Ke Krantikari Vyaktitva Evam Vicharon Ka Adhyayan: Ek Sandarbh

भगतसिंह के क्रांतिकारी व्यक्तित्व एवं विचारों का अध्ययन : एक संदर्भ

Shri Bhagwan | Assistant Professor, Department of History, CRM JAT College Hisar, Haryana

KEYWORDS



जीवन परिचय :

सिख भगतसिंह का जन्म 28 सितम्बर, 1907 ई0 को बंगा गांव जिला लायलपुर पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान में) हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशनसिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। यह सिख परिवार था। जिस पर आर्य समाज व महर्षि दयानंद की विचारधारा का गहरा प्रभाव था, भगतसिंह में यह संस्कार कूट–कूट कर भरे हुए थे, अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 ई0 को हुए जलियावाला बाग हत्याकाण्ड ने भगतसिंह की सोचपर गहरा प्रभाव डाला था, जहां एक ऐसा रक्तिम हत्याकांड हुआ जिसने न केवल भारतीयों अपितु विश्व के न्यायप्रिय लोगों के दिलों को हिला कर रख दिया था। यह घटना भगतसिंह ही नहीं भारतीय इतिहास में एक नया मोड़ प्रमाणित हुई। प्रसिद्ध ब्रिटिश

लेखक वी0 चिरोल ने निष्पक्ष रूप से यह स्वीकार किया।

''अंधविष्वास और जब तक हमारे देष में धार्मिक कट्टरता बनी रहेगी तब तक हम कभी भी अपने देष को आगे नहीं बढ़ा सकते।

भगतसिंह संगठन :

भगतसिंह ने लाहौर में 1926 ई0 को नौजवान भारत सभा की स्थापना की। हिन्दुस्तान सोशलिस्ट, रिपब्लिकन, एसोसिएशन, अभिनव भारत नामक संगठनों के निर्माण में अपना सक्रिय एवं महत्वपूर्ण योगदान दिया। लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भारत की आजादी की लड़ाई में वे कूद गए थे।

क्रांतिकारी गतिविधियां :

भगतसिंह आन्दोलन के समय सराभा के संपर्क में आए। जिन्होंने, उन्हें क्रांतिकारी गति. विधियों में शामिल होने की प्रेरणा (सलाह) दी और वीर सावरकार की किताब सन् 1857 प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम पढ़ने के लिए भेंट की। भगतसिंह पर इसका भारी प्रभाव पड़ा। उन्होंने इस किताब के बाकी संस्करण छापने में सहायता प्रदान की। जून 1924 ई0 में भगतसिंह वीर सावरकर से पेखड़ा जेल में मिले और क्रांति की पहली गुरु शिक्षा ग्रहण की। इसी मध्य उनके जीवन परिवर्तन आया। आजाद से मुलाकात की और उनके दल में शामिल हुए। बाद में वे अपने दल के प्रभावशाली क्रांतिकारियों के प्रतिनिधि भी बने। प्रमुख क्रांतिकारियों में सुखदेव, राजगुरु, भगवती चरण, बटुकेश्वरदत्त आदि थे।

लाला लाजपतराय की मृत्यु का प्रभाव :

30 अक्तुबर 1928 ई0 को जब यह कमीशन लाहौर पहुंचा तो लाला ने इसके विरोध में विशाल जुलूस का नेतृत्व किया। अंग्रेजों ने उन पर लाठी चार्ज करवा दिया जिसमें लाला जी घायल हो गए और 17 नवंबर, 1928 को उनकी मृत्यु हो गयी। प्रतिशोध स्वरूप क्रांतिकारियों ने सुपरिण्टेडेंट स्क्रांट को मारने की योजना बनायी। इसी के तहत घटना को अंजाम देने के लिए भगतसिंह और राजगुरु लाहौर कोतवाली के सामने व्यस्त मुद्रा के टहलने लगे। 17 दिसम्बर, 1928 ई0 को 4:15 बजे स्कॉट की जगह ए0एस0पी0 साण्डर्स के आते ही राजगुरु ने गोली चलाई और भगतसिंह ने 3–4 गोली दाग कर उसे मार दिया। सिपाही चननसिंह ने उनका पीछा किया, जिसे आजाद ने मौत के घाट उतार दिया। इस तरह दल और लोगों ने लाला लाजपतराज की मौत का बदला ले लिया गया।

दिल्ली के केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंकना :

अंग्रेज सरकार दिल्ली की असेम्बली में ''पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट्स'' लाने की तैयारी में थी। जो बहुत ही दमनकारी कानून थे और सरकार उन्हें पास करने का फैसला कर चुकी थी। शासकों का इस बिल को कानून बनाने के पीछे उद्देश्य था कि जनता में क्रांति का जो बीज पनप रहा है, उसे अंकुरित होने से पहले ही रोकना था, लेकिन चन्द्रशेखर आजाद और उनके साथियों को यह बिल मंजूर नहीं था।

अतः इस बिल के विरोध में संसद में बम धमाके के लिए भगतसिंह एवं बटुकेश्वरदत्त को नियुक्त किया गया। 8 अप्रैल 1929 के दिन जैसे ही बिल संबंधी घोषणा की गई। भगतसिंह ने बम फेंका, नारा दिया .....''इंकलाब जिन्दाबाद''.....

साम्राज्यवाद के प्रति आम जनता का रोष प्रकट किया गया था और क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया आजीवन कारावास दिया गया। भगतसिंह और उनके साथियों पर लाहौर षडयन्त्र का मुकदमा भी चला।

भगतसिंह के जेल के दिनों की यादे :

जेल में भगतसिंह ने करीब 2 साल व्यतीत किए। इस दौरान वे लेख लिखकर अपने क्रांतिकारी विचारों को व्यक्त करते रहे। जेल में भगतसिंह और उनके साथियों ने 64 दिनों तक भूख हड़ताल की, उनके एक साथी यतीन्द्रनाथ दास ने भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिये थे। अदालत ने भगतसिंह को भारतीय दण्डसंहिता की धारा 129, 302 तथा विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 4 तथा 6 एफ तथा भारतीय दण्ड संहिता की धारा 120 के अन्तर्गत अपराधी सिद्ध किया तथा 7 अक्टूबर, 1930 को 68 पृष्ठों में निर्णय दिया जिसमें भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को मृत्यु दण्ड की सजा मिली।

आज भी भारत और पाकिस्तान की जनता भगतसिंह को आजादी के दीवाने के रूप में देखती है, जिन्होंने अपनी जवानी सहित सारी जिन्दगी देश के लिए समर्पित कर दी।

भगतसिंह को फांसी :

23 मार्च, 1931 को शाम में करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगतसिंह तथा उनके दो

साथियों सुखदेव और राजगुरु को फांसी दी गई। फांसी पर जाने से पहले वे रामप्रसाद बिस्मिल की जीवनी पढ रहे थे। जब उन्हें सूचना दी गयी थी कि उनके फांसी का वक्त आ गया है, तो उन्होंने कहा था, ठहरिए पहले एक क्रांतिकारी दूसरे से मिल तो ले। एक मिनट बाद किताब छत की ओर उछाल कर बोले ''ठीक है अब चलो''।

फांसी पर जाते समय तीनों मस्ती से गा रहे थे –

''मेरा रंग दे बसंती माय रंगे'' फांसी के बाद आन्दोलन न भड़क जाए, इस डर से अंग्रेजों ने पहले इनके मृत शरीर के टुकड़े किए, फिर इसे बोरियों में भरकर फिरोजपुर की ओर ले गए। जहां मिट्टी तेल डालकर इन्हें जलाया गया। गांव के लोग आग जलती देखी तो करीब आ गए। अंग्रेजों ने उनसे डर कर लाशों के अधजले टुकड़ों को सतलुज नदी में फेंका और भाग गए। गांव के लोगों ने उन्हें निकाल कर विधिपूर्वक उनका अन्तिम संस्कार किया और ये तीनों वीर अमर हो गए। इनके मृत्यु की खबर लाहौर के दैनिक ट्रिब्युन तथा न्यूयार्क के एक पत्र डेली वर्कर ने छापा पर भारतीय वुद्धीजीवियों को मा. र्क्सवादी पत्रों के आने पर पाबंदी के कारण पता नहीं चला। भगतसिंह ने अंग्रेज सरकार को एक पत्र लिखा था कि उन्हें अंग्रेज सरकार के विरूद्ध एक युद्ध बंदी समझ फांसी की बजाय गोली से उड़ा दिया जाए। यहां यह बात महत्वपूर्ण है कि रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में जो–जो दिशा निर्देश दिये थे, भगतसिंह के विचारों का आदेशों का अक्षरशः पालन किया।

भगतसिंह की प्रमुख रचनाएं :

एक शहीद की जेल नोट बुक – संपादन भूपेन्द्र दूजा, सरदार भगतसिंह : पत्र और दस्तावेज – संकलन विरेन्द्र संधू, भगदत सिंह के संपूर्ण दस्तावेज संपादक – चमनलाल इत्यादि।

उपसंहार :

भगतसिंह का क्रान्तिकारी व्यक्तित्व एवं उनके विचारों का प्रभाव तत्कालीन परिस्थितियों के प्रति अग्रसर रहा है, 1857 की क्रान्ति से मिली विचारधारा और सावरकरजी के आध ार पर भगतसिंह को कर्त्तव्य पालन, योगदान, भारतीय क्रान्तिकारी स्थितियों, बलिदान की कहानी आज भी हमें उनकी याद के साथ स्वतन्त्रता की सुगन्ध दे देती है।

REFERENCES

स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी साहित्य का इतिहास भाग–2, पृ0 563, द्य – वी0 चिरोल – भारत नया और पुराना, लन्दन 196 पृ0 192 द्य – स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी साहित्य का इतिहास भाग–2 पृ0 563 द्य – अमर शहीद को नमन राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली प्रकाशन, 2002, पृ0 92 पर अभ्युदय में 25 मार्च 1931 को (फांसी के दो दिन बाद प्रकाशित एक समाचार पत्र)। द्य द्य – दैनिक जागरण, नई दिल्ली, 23 मार्च 2012, पृ0 25 लेख जरा याद करो कुर्बानी। द्य – स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी साहित्य का इतिहास भाग–2, पृ0 566 द्य